माता-पिता और संतान से भू-सांस्कृतिक राष्ट्रवाद को समझना जरूरी है। इसके लिए एक वर्णन बताना चाहूंगा। द्वितीय महायुद्ध के बाद देश का बंटवारा हुआ। तब यह माना गया कि एशिया के लोग पिछड़े हैं। वह धर्म के नाम पर लड़ते हैं। जातियों में बंटे हुए हैं। उस दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति को भारत ने भोगा। 1990 के बाद पूरा यूरोप परेशान है। 1947 में जिस द्विराष्ट्रवाद से भारत जूझा था, उसी द्विराष्ट्रवाद से यूरोप जूझ रहा है। वहां फ्रांस और फ्रेंच मुद्दा बन गया है। यूरोपीय देश जनसांख्यकीय परिवर्तन पर शोध कर रहे हैं। फ्रेंच, नॉर्वे, जर्मन के पास राष्ट्रीयता व्यक्त करने की शब्दावली नहीं है। विश्व प्रसिद्ध राजशास्त्री डॉ. इकबाल नारायण सोवियत संघ पर पीएचडी कर रहे थे। वह अचरज में थे कि विविधता के बाद भी भारत एक है, वहीं विविधता नहीं होने के बाद भी सोवियत संघ में एकात्मता नहीं है। संयोग था कि प्रोजेक्ट पूरा होने के पहले ही सोवियत संघ टूट गया।

राष्ट्र और राज्य की अवधारणा के कारण विश्व चुनौती से घिरा हुआ है। राष्ट्रीयता को भू-सांस्कृतिक रुप से व्यक्त करने पर चिति की पहचान होती है। तब हम विश्वयुद्ध की वजाय विश्व शांति तक पहुंचेंगे। राष्ट्र और राज्य की अवधारणा ने विश्व को साम्राज्यवाद, उपनिवेशवाद के साथ दो महायुद्ध दिए। जिसे आज वैश्विकरण कहा जाता है, इससे अनेक तरह की गला काट स्पर्धा पैदा हो गई है। मानवता के सुख के लिए भू-सांस्कृतिक राष्ट्रवाद को आना चाहिए। उसके परिणाम से मानवता सुखी हो पाएगी। इसको लाने का दायित्व भारत निभा रहा है। पंडित दीनदयालजी के जन्म शताब्दी के अवसर पर हम संकल्प करें कि इस अवधारणा को हम मानवता के मस्तक का तिलक बनाएंगे।

पंडित दीनदयाल उपाध्याय जन्म शताब्दी वर्ष पर 14 अगस्त, 2017 को इंदौर और 18 नवम्बर, 2017 को अजमेर में दीनदयाल शोध संस्थान ने दो महत्वपूर्ण व्याख्यान आयोजत किए. इन दोनों में मुख्य वक्त थे राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के माननीय सरकार्यवाह सुरेश जोशी (भय्याजी)। इसका संपादन दिल्ली विश्वविद्यालय के डिप्टी प्रॉक्टर डॉ. राजकुमार फुलवारिया एवं पत्रकार राकेश शुक्ला द्वारा किया गया है। संपादित रूप में ये व्याख्यान यहां प्रस्तुत किए जा रहे हैं।

शीघ्र ही इनका अंग्रेजी रूपांतरण भी प्रकाशित किया जा रहा है।